A Quarterly News Letter of Maitree Jankalyan Samiti

मैत्री समूह

Chirping Sparrow

Year - 5, Issue-I, October to December 2008

जा तेरे स्वप्न बड़े हों।
भावना की गोद से उतर कर
जल्द पृथ्वी पर चलना सीखें।
चांद तारों सी अप्राप्य ऊंचाईयों के लिये
रूठना मचलना सीखें।
हँसें,
मुस्कुराएं,
गायें,
दीये की रोशनी
देख कर ललचाएं
उंगली जलाएं।
अपने पांव पर खड़े हों।
जा तेरे स्वप्न बड़े हों।

– दुष्यन्त कुमार

अवार्ड सेरेमनी विशेषांक

YOUNG ACHIEVERS

Priyanka Jain
Thane
96.50% in XII - Sci.
AIEEE, BITS-PILANI Direct Adm.
5th Rank in Mah.State,
First in National Dance Comp.

Arohi.A .Agarkar
Nagpur
87.66% in XII - Arts
Trinity Guildhall from Trinity College London

Anubhav Jain
Tikamgarh
X with 91 %
Hockey,Football State Player

Sugam Jain
Shivpuri
X with 91.2%
Kick Boxing State Player

Mohit Jain
Toda Rai Singh
X with 87.2 %
Basketball State Player

Pulkit Jain
Guna
X with 88 %
Basketball State Player

Anamika Jain
Jabalpur
X with 85 %
Gold Medal In Wooshu State Level

Tanvi Gangwal
Aurangabad
X with 83.45%
Lawn Tennis State Player

Surbhi Jain
Khurai
X with 81.40 %
Kho-Kho State Player

Reshu Bhaiji
Raisen
XII Sci with 77.55 %
Handball State Player

Mahima Jain
Ashok Nagar
XII Comm. with 78.88%
Handball State Player

Hiral Kala
Jaipur
XII Comm. with 80.20%
Gold Medal In Taekwondo (West Zone)

Ruby Jain
Ashok Nagar
XII Comm
Kho-Kho State Player

Prayas Jain
Dewas
Handicapped
63.77% in X II Arts

Pooja Jain
Ashok Nagar
Handicapped
77.41 % in X

Chirping Sparrow is published quarterly by the
Maitree Jankalyan Samiti
1/205, Professor Colony, Agra - 282 002
E-mail : maitreesamooh@hotmail.com
Website : www.maitreesamooh.com Mobile: 94254-24984

It is circulated to all Young Jaina Awardees and friends of Maitree Jankalyan Samiti.

TRUTH ABOUT TRADITION

आये दिन किसी न किसी समाचार पत्र, पाक्षिक, मासिक पत्रिकाओं या टेलीविजन प्रसारणों के माध्यम से देश विदेशों के किसी भी नगर या गाँव से संबन्धित पुनर्जन्म के किस्से प्रकाशित/प्रचारित होते रहते हैं। यथा, एक ग्यारह वर्षीय स्कूल छात्रा पायल देसाई, हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत व गुजराती में फर्राटेदार ढंग से कोई भी गीत, भजन या श्लोक उलटा सुना देती है, और सुनने वाले व्यक्ति दाँतों तले अंगुली दबा लेने पर मजबूर हो जाते हैं। आठ वर्षीय बालक मदन मोहन, रामायण और गीता प्रवचनों के कारण लोगों के आकर्षण का केन्द्र बना हुआ है। अमुक साल अमुक महिने की किसी तारीख को कौन सा वार होगा ? कौन, कब, कहाँ, किस दिन मिला था? अपने दादा–नाना की पाँच पीढ़ियों की जानकारियां, चेहरा और नाम बता सकना, चार वर्षीय अर्चित दोषी के बांयें हाथ का खेल है । पूरे विश्व के अनेक देशों की पुनर्जन्म से संबन्धित इस तरह की करीब 2500 घटनाओं का डॉ स्टीवेन्सन ने संग्रह किया है ।

वर्तमान जन्म के पहिले भी संसार के किसी देश, नगर या गांव मे शरीर पर्याय से जीवित रहे, मौजूद रहे, मनुष्य जीव का मरने के बाद फिर से (पुनः) जन्म लेने या उत्पन्न हो जाने को पुनर्जन्म (फिर से जनम ले लेना) कहते है। जैनदर्शन और अन्य भारतीय दर्शन तो किसी भी संसारी जीव के पुनर्जन्म को अपरिहार्य मानते हैं।

पुनर्जन्म अधिकांश भारतीय दर्शन जैसे जैन, हिन्दू, सांख्य, वैशेषिक, मीमांसा, न्याय, योग, बौद्ध आदि की मूल अवधारणाओं में से एक है। प्राचीन ग्रीक दार्शनिकों ने भी पुनर्जन्म के सिद्धांत को माना है। ईसाई, कब्बाह, इस्लाम और सूफी मतों की कुछ शाखाएं भी पुनर्जन्म को किसी न किसी रूप में स्वीकार करती हैं।

पिछले कुछ दशकों में पूर्वजन्म के स्मरण की कई घटनाओं और व्यक्तियों पर किये गये प्रामाणिक अध्ययनोपरांत पुनर्जन्म पर शोध करने वाले वैज्ञानिक भी पुनर्जन्म की संभावना से इंकार नहीं करते और पुनर्जन्म को जीव वैज्ञानिकी तौर पर सत्य/असत्य सिद्ध करने वाले शोध कार्य ने गति पकड़ी है।

प्रसिद्ध जीव वैज्ञानिक थामस हक्सले ने अपनी पुस्तक **Evolution & Ethics and other essays** में पुनर्जन्म की संभावना को स्वीकार किया है और उस पर वैज्ञानिक तथ्यों को लेकर विस्तृत चर्चा की हैं।

पुनर्जन्म और जातिस्मरण की घटनाओं का अधिकारिक संकलन और वैज्ञानिक विश्लेषण यूनिवर्सिटी ऑफ वर्जीनिया के प्रोफेसर स्टीवेन्सन ने अपनी **Twenty Cases Suggestive of Reincarnation and "Reincarnation and Biology: A Contribution to the Etiology of Birthmarks and Birth Defects Volume 1: Birthmarks" and "Reincarnation and Biology: A Contribution to the Etiology of Birthmarks and Birth Defects Volume 2: Birth Defects and Other Anomalies".** आदि पुस्तकों में किया है । स्टीवेन्सन ने 40 से अधिक साल पूर्वजन्म का स्मरण रखने वाले बच्चों व उनके इस जन्म के परिजनों के अध्ययन पर व्यतीत किया है। उन्होंने सभी मामलों में बड़ी गहराई से नियंत्रित प्रयोग करते हुए जानकारी और तथ्य संकलित किये हैं। स्टीवेन्स के अतिरिक्त पीटर रेमस्र, डॉ. ब्रैन वैस, डॉ. वाल्टर सेमक्व्यू जैसे जीव वैज्ञानिक भी पुनर्जन्म को स्वीकार करते हैं।

जिस मनुष्य जीव ने वर्तमान में जन्म लिया है वही जीवात्मा, भूतकाल में भी अथवा वर्तमान जन्म के पहिले भी संसार में शरीर पर्याय से जन्म लेकर जीवित था, जिसे की लोगों ने देखा था, उसे उसका पूर्वजन्म कहते हैं । पुनर्जन्मी व्यक्ति द्वारा अपने पूर्वजन्म की सत्य घटनाओं को कहे जाने पर उन घटनाओं का प्रामाणिक साबित होना पुर्नजन्म के सिद्धांत को बल देता है । वहीं पिछले कुछ दशकों में स्टीवेंसन आदि वैज्ञानिकों द्वारा किये गए अध्ययन के बाद वैज्ञानिक भी पुनर्जन्म की संभावना से इंकार नहीं कर रहें हैं।

जीवात्मा के बार–बार शरीर पर्यायों से जन्म मरण करते रहने को प्रेत्याभाव (पुनर्जन्म) कहते है। पूर्वजन्म के स्मरण को जीवजाति स्मरण ज्ञान भी कहते है । अपने एक या एक से अधिक पूर्वजन्मों की घटनाओं या तथ्यों को स्मृति ज्ञान (याददाश्त) गुण के आधार पर बतलाने को जातिस्मरण ज्ञान कहते है । जरा सोचें, यदि हम वर्तमान शरीरमरण के बाद भी आत्मस्वरूप से अगली पर्याय में मौजूद नहीं है, तो फिर धर्म,

अध्यात्म, पुण्यकर्म, सत्कर्म व मोक्ष पुरूषार्थ किस प्रयोजन से और किसके लिये किया जाना चाहिए? यह सभी निरर्थक (अर्थहीन) हो जावेगें। इससे विज्ञान, अविज्ञान, धर्म, अधर्म, कर्तव्य, अकर्तव्य, विवेक, अविवेक ज्ञान का भी कोई मतलब नहीं रह जावेगा । सामाजिक व्यवस्था भी चरमरा जावेगी। मनुष्य, पशुओं की तरह स्वच्छन्द पाश्विक वृत्ति से चलने लगेंगे।

पुनर्जन्म की मान्यता का संबंध, कई अर्थो में मानवीय सभ्यता, सामाजिक विकास, आत्म विकास एवं ज्ञान चेतना के विकास से भी काफी महत्वपूर्ण है । अनेक पूर्वजन्मों के अभ्यस्त संस्कारों से कई मनुष्य जन्म से ही कवि, गणितज्ञ, कलाकार, गायक, कुशल वक्ता होते हैं। 2–4 वर्ष की अल्पायु के बच्चे का अच्छा गाना, बजाना, लिखना, तीक्ष्ण बुद्धि का होना, उसके पूर्वजन्म के संस्कारों को ही सूचित करता है ।

पक्षी अपना घर/ घोंसला किस ज्ञान से बनाते हैं ? मादा मगरमच्छ एवं कच्छप आदि द्वारा समुद्र किनारे रखे गये अण्डों से जन्म लेने वाले बच्चे जन्म लेते ही समुद्र या नदी के पानी की ओर गमन क्यों करते हैं ?

पक्षी जन्म लेते ही अभ्यस्त पूर्वसंस्कारों से ही आकाश में उड़ने लगते हैं। नवजात उत्पन्न शिशु में भी पूर्वजन्मों के अनुभव, स्मृति ज्ञान होने के कारण ही हर्ष, भय, शोक आदि संस्कार पाये जाते है।

पूर्व में बार–बार जन्म लेने के संस्कारों के अभ्यास के कारण ही नवजात बालकों में माता के स्तनपान करने की अभिलाषा देखी जाती है। मगरमच्छ द्वारा समुद्र या रेत में छिपाकर रखे गये अण्डों से जन्म लेने वाले बच्चे, जन्म लेते ही समुद्र नदी के पानी की तरफ ही गमन करते हैं। इनमें से भी जड़ शरीर पर्याय बदलते हुए, स्मृति ज्ञान गुण के साथ आत्मा, नित्यता एवं पुनर्जन्म सिद्ध होता है। पूर्व में देखे, जाने गये पदार्थ/विषय को ही आत्मा स्मृति ज्ञान से धारण करती है। जिससे उसी जीवात्मा का पूर्वजन्मों में होना निश्चित होता है ।

जैन दर्शन पूर्ण वैज्ञानिक एवं सैद्धान्तिक आधार पर पुनर्जन्म मानता है । जैन दर्शन में पुर्नजन्म त्रैकालिक सत्, द्रव्य गुण, पर्याय पर आधारित नित्य शास्वत सत् द्रव्य है । पूर्व वर्णित पूर्वजन्म की कथाओं से यह सिद्ध होता है, कि अपने पूर्वजन्म का वृत्तान्त कहने वाले या पुनर्जन्म वाले (मनुष्य) जीव आत्मा पूर्व में धारित, उन्हीं जड़ शरीरों से युक्त नहीं थे। यद्यपि अपने स्मृति ज्ञान गुण (याददाश्त) के आधार पर बताये गये तथ्यों से जीव चेतना या आत्मा रूप से वही जीवात्मा थे, जो कि पूर्व में शरीर पर्याय धारण कर चुके थे । जीव चेतना या आत्मा त्रैकालिक रूप से सतरूप है उसका त्रैकालिक रूप ज्ञान गुण है यद्यपि शरीर पर्यायें आयु कर्म पूर्ण हो जाने से भिन्न, अनेक, अनन्त हो जाती हैं।

पुनर्जन्म की धुरी नैतिकता के आधार पर रखी गई है, जिससे समाज तथा व्यक्ति दोनों को ही लाभ होता है । व्यक्ति यह मानता है कि मेरी जैसी ही आत्मा सबकी है और सबकी जैसी ही मेरी आत्मा है, मेरा सबसे संबन्ध हो सकता है । यही भावना व्यक्ति प्रेम और भ्रातृत्व का भाव भी बढ़ाती है।

–एन. के. गोयल

आपसे अनुरोध

- हमारी मेलिंग लिस्ट update करने के लिए इस अंक के साथ हम एक फार्म भी भेज रहे हैं। सभी यंग जैना अवार्डी इस फार्म को भरकर 31 जनवरी 2009 तक हमें आवश्यक रूप से मैत्री समूह के पते पर भेजें।
- Young Jaina Awardee 2008 के लिए यह न्यूजलेटर Chirping Sparrow एक वर्ष तक निःशुल्क भेजा जाएगा।
- अन्य किसी भी Young Jaina Awardeee को यदि न्यूजलेटर चाहिये है तो उसकी सूचना साथ में भेजे जा रहे फार्म में अंकित करें।
- हमसे पत्राचार करते समय हमेशा अपने रजिस्ट्रेशन नम्बर का उपयोग करें।
- पत्रिका के बारे में अन्य कोई सुझाव हों तो हमें अवश्य अवगत करायें।
- अपना पता, फोन नम्बर, ई–मेल बदलने पर तत्काल हमें सूचित करें।
- Chirping Sparrow आप हमारी वेबसाइट www.maitreesamooh.com पर भी देख सकते हैं और प्रिंट ले सकते हैं।
- मैत्री समूह से सम्बन्धित अन्य जानकारी हेतु www.maitreesamooh.com Visit करें।
- मैत्री समूह का सम्पर्क नम्बर 09425424984 तथा ई–मेल maitreesamooh@hotmail.com है।

आपके प्रश्न

Q क्या मंदिर जी में उपस्थित बड़े भगवानों का रोज अभिषेक होना चाहिए ?

अतुल जैन (MPC 4009) गोटेगांव

A मंदिर में तीन तरह की प्रतिमाएं होती है। पहली अचल प्रतिमा जो कि अवगाहना में बड़ी होती हैं उन पर जल की धारा वर्ष में एक बार की जाती है रोजाना उस प्रतिमा को गीले कपड़ों से पोंछ लिया जाता है यह भी अभिषेक है। अचल प्रतिमाओं से छोटी प्रतिमाएं जो कि शोभायात्रा में निकाली जाती हैं उनका अभिषेक शोभायात्रा में जाते समय और शोभायात्रा से वापिस लाते समय दो बार किया जाता है। शेष जो उनसे भी छोटी प्रतिमा होती हैं उनमें से एक प्रतिमा रखकर पाण्डुक शिला की कल्पना करके विधि पूर्वक प्रतिदिन अभिषेक किया जाता है ।

एक साथ थाली में दस-बीस प्रतिमाएं रखकर के अभिषेक करना या कि वो भगवान जिनके अभिषेक के बाद विभिन्न स्थानों पर मूर्ति में रूके हुए पानी को हटाया नहीं जा सकता, का अभिषेक करने पर कुछ न कुछ पानी रह ही जाता है, इसलिए अभिषेक के समय इस बात का ध्यान रखते हुए विवेकपूर्वक हमें इस क्रिया को करना चाहिए। भक्ति के अतिरेक में अज्ञानता पूर्वक क्रिया करने से कोई लाभ नहीं होता। वास्तव में भगवान की परम विशुद्ध अवस्था हमें प्राप्त हो इस भावना से अभिषेक किया जाता है। मंदिर की प्रयोगशाला में भगवान बनने के लिए किया जाने वाला यह एक प्रयोग है। अभिषेक के बारे में Chirping Sparrow के अंक जनवरी-मार्च '2005 में विशेष पढें - अभिषेक, एक वैज्ञानिक छानबीन।

Q चातुर्मास स्थापना के अवसर पर कलश क्यों स्थापित किया जाता है ? क्या यह आवश्यक है कि वह बहुत सुन्दर और कीमती हो, साधारण से काम नहीं चल सकता?

अतुल जैन (MPC 4009) गोटेगांव

A वास्तव में देखा जाए तो मुनिमहाराज जी भक्तियों के द्वारा अपने चातुर्मास की स्थापना करते है उसमें कलश स्थापना की कोई बात नहीं है। रही बात श्रावकों के संकल्प की, तो उसे मिट्टी, पीतल, तांबा, इत्यादि धातु से निर्मित कलश की स्थापना करके किया जा सकता है। वैसे कलश का अर्थ कुम्भ है जो कि मिट्टी का हो यह योग्य है पर आजकल अपनी मान कषाय की पुष्टि के लिए चांदी के सुन्दर कलश, एक के स्थान पर तीन-तीन कलशों की स्थापना करने का रिवाज चल पड़ा है और कलश की बोली भी लाखों रूपयों की होती है इससे जिस महाराज के कलश की स्थापना की जा रही है उससे उनका Status मालूम पड़ता है कि वह कितना बड़ा है। जितनी अधिक बोली होगी उतने अधिक अपने बड़े होने का अहसास होगा। पहले आहार जी के चातुर्मास तक आचार्य महाराज कलश स्थापना नहीं कराते थे, पर अब लोगो के कहने से करवाना शुरू कर दिया है।

Q कुछ लोग बोलते है कि आज के युग को देखकर लगता है कि जो ईमानदारी से जीते हैं वे दुःखी होते हैं और पापी सुख से जीते हैं। मैं अपने मित्रों को जवाब देती हूँ कि उनके पूर्व जन्म का फल है या पुण्य का उदय है इस पर लोग कहते है कि उनका पुण्य कब तक चलेगा और पूर्व जन्म किसने देखा है? पाप का फल भोगते समय लोग दुःखी होते हैं, कहते है कि हमने ऐसा क्या बुरा किया था? अपने पूर्वार्जित पापोदय को समझे बिना लोग आर्त रौद्र भाव करते है और आगामी पाप का बन्ध करते है । इस पाप पुण्य के सवाल को किस प्रकार सहपाठियों को समझाया जाये ?

स्वाति जैन मुंगावली (312948)

A अच्छे कर्मो का फल अच्छा होता है और बुरे कर्मो का फल बुरा होता है यह सब जानते हैं । जो अच्छे कर्म करता है वह ईमानदार है, उसको अपनी ईमानदारी का फल आत्मसंतोष प्राप्त होता है और लोग मन ही मन उसकी ईमानदारी की प्रशंसा करते है पर उसे भौतिक सुख प्राप्त नहीं होता है। और बुरे कर्म करने वाला बेईमान आदमी असन्तोष में जीता है और लोग उसे गलत मानते है पर उसे अपने पुरूषार्थ से भौतिक सुख बहुत अधिक मात्रा में प्राप्त हो जाते हैं । भौतिक सुख प्राप्त होने को ही हम सुख मान लेते है जबकि भौतिक सुख प्राप्त होना, हमारे ऐसे वर्तमान पुरूषार्थ का फल है जिसमें कोई अन्तराय कर्म बीच में नहीं आया इसलिए भौतिक सुखों की प्राप्ति हो गई । वास्तव में तो आत्मसंतोष या आत्मशान्ति प्राप्त होना ही वास्तविक सुख है। पूर्व जन्म होता है या नहीं ये बहस अपन नहीं करेगें पर इतना अवश्य है कि हम कई बार जन्मते और मरते रहते हैं। एक बार जन्म करके मरना और फिर से उत्पन्न होना, यह पुनर्जन्म है और हमारे कर्म संस्कार की तरह हमारे साथ हमेशा रहते हैं। चाहे पुण्यकर्म हो या पाप कर्म हो । जो पाप पुण्य के फल में समता भाव रखते है वे कर्मों को जीत लेते हैं और कर्मों से मुक्त हो जीते हैं। जो जीव पाप कर्म का फल भोगते समय दुःखी होते हैं और सोच नहीं पाते कि मेरे इस दुःख का कारण मेरे द्वारा किये गये बुरे कर्म ही और पाप कर्म के उदय में दुःखी होकर नये कर्म बांध लेते है ।

मैने किया विगत में कुछ पुण्य पाप,
जो आ रहा उदय में स्वयमेव आप।
होगा न बन्ध तब लो जब लौं न राग,
चिन्ता नहीं उदय से बन वीतराग।।

हम यदि कर्म के उदय में वीतरागता या समता भाव धारण करे, तो आगामी कर्म बन्ध नहीं होगा यही मुक्ति का उपाय है। पुण्य और पाप के बारे में इतना ही कहेंगे कि जो हमें पवित्र करे, जिसके करने से हमारा मन प्रसन्न होकर ऊपर की ओर उठ जाता है ऐसे अच्छे कर्म पुण्य कर्म कहलाते हैं, और पाप कर्म वे हैं, जो हम दूसरों को पीड़ा देने में या झूठ बोलने में या चोरी करने में या परिग्रह जोड़ने में करते हैं, जो हमारी छाती पर एक बोझ की तरह भारी होकर रख दिये जाते है।

Q जो लोग जिनेन्द्र भगवान की प्रतिमा का अभिषेक करने का निषेध करते हैं और कहते हैं कि अभिषेक जन्म के समय किया जाता है ऐसे लोगो को क्या उत्तर है ?

अतुल जैन (MPC 4009) गोटेगांव

A जैनाचार्यो ने चार तरह के अभिषेक का उल्लेख किया है। तीर्थंकर भगवान का सुमेरू पर्वत पर स्थित पाण्डुशिला पर ले जाकर जो क्षीरसागर के जल से

अभिसिन्चन किया जाता है वह जन्माभिषेक कहलाता है। तीर्थंकर का कुमार अवस्था में राजतिलक के अवसर पर जो अभिषेक किया जाता है वह राज्याभिषेक कहलाता है । तीर्थकर का जिनदीक्षा लेने से पूर्व जो अभिषेक किया जाता है वह दीक्षा अभिषेक कहलाता है । विधि विधान पूर्वक प्रतिष्ठित किए गए जिन बिम्ब पर या जिनप्रतिमा पर जो अभिषेक किया जाता है वह चतुर्थाभिषेक या प्रतिमाभिषेक कहलाता है। इसलिए जो लोग ऐसा कहते है कि प्रतिदिन पूजा से पहले जो जिनबिम्ब का या जिन प्रतिमाओं का अभिषेक होता है, वह जन्माभिषेक है, उसे करना आवश्यक नहीं है, उनका यह कहना आगम के विरूद्ध है । इसका आगम ग्रन्थ चारित्रसार में भी उल्लेख किया गया है कि अभिषेक चार प्रकार का होता है।

Q क्या पत्र पत्रिकाएं भी जिनवाणी ग्रन्थ के समान पूज्य है ?

अतुल जैन (MPC 4009) गोटेगांव

A देव गुरू शास्त्र के अन्तर्गत शास्त्र या ग्रन्थ को पूज्य माना गया है और नव देवताओं में भगवान की वाणी दिव्य ध्वनि को एक देवता मानकर पूज्य माना है, इसलिए पत्र पत्रिकाएं ग्रन्थ के समान पूज्य नहीं है लेकिन यदि उनमें जिनवाणी का कोई अंश लिखा हुआ है तो उनका अविनय भी नहीं हो इस प्रकार का व्यवहार उनके साथ करना चाहिए ।

Q क्या रात्रि में मंदिर जी में भगवान की परिक्रमा केवल हिंसा के कारण नहीं की जाती है या अन्य कोई कारण? यदि जीव हिंसा का कारण है तो रात्रि में मंदिर जाने पर भी जीव हिंसा होगी, तो रात्रि में हम मंदिर क्यों जाते है ?

अतुल जैन (MPC 4009) गोटेगांव

A रात्रि में परिक्रमा पथ पर प्रकाश न होने से दिखाई भी नहीं देता है और जीवराशि सघन होती है इसलिए हिंसा से बचने के लिए परिक्रमा नहीं लगाने का विधान है और न ही द्रव्य चढ़ाने का। रात्रि में खाली हाथ मंदिर जाकर मात्र भगवान की भक्ति करना ही उचित है। लेकिन वह भी संध्या समय जबकि सूर्यास्त होता है उसी समय मंदिर जाकर भजन या भक्ति पढ़ने का विधान किया गया है । ज्यादा रात्रि में बहुत अधिक बिजली का प्रकाश करना, हिंसा को बढ़ावा देना है, इस बात का ध्यान रखना चाहिए।

Q परिवार में किसी का देहान्त होने पर या किसी के जन्म पर पूरे परिवार को सूतक क्यों लग जाता है। इस स्थिति में मंदिर में प्रवेश करना क्यों गलत है ?

अतुल जैन (MPC 4009) गोटेगांव

A परिवार में किसी का देहान्त या जन्म होने पर पूरे परिवार को सूतक लग जाती है, क्योंकि जन्म या मरण के समय होने वाली अशुद्धि इसका कारण है। और जन्म या मरण के समय हमें ध्यान रहे कि हम जितने सम्बन्ध बढ़ाते जाएंगे उतना ही धर्म से विमुख होते जाऐगें, यह इस बात का प्रायश्चित भी है। एक बेटा पैदा होना इस बात का सूचक है कि उसने जन्म लेते ही दस दिन हमें धर्म से विमुख कर दिया और मरण होने पर भी तेरह दिन धर्म से वंचित रहेगें । जन्म के समय हमें बहुत अधिक खुशी होती है और मरण के समय बहुत अधिक दुःख होता है दोनो अवसर पर हम सुख और दुःख का अधिक अनुभव करते है इसलिये मन में स्थिरता नहीं रहती। धार्मिक कार्य के लिये मन की स्थिरता जरूरी है इसलिए इन अवसरों पर धर्म कार्यो का निषेध किया गया है। हो सकता है सुख और दुःख की अधिकता में मन स्थिर न होने से मंदिर का पवित्र वातावरण भी हमारे द्वारा दूषित होता है, इसलिये भी शायद कुछ दिन के लिए मंदिर इत्यादि से हमें दूर रखा गया हो।

Q जैन धर्म में स्वास्तिक का क्या महत्व है ?

अतुल जैन (MPC 4009) गोटेगांव

A स्वास्तिक का अर्थ कल्याण होता है इसलिए सब जीवों का कल्याण हो ऐसी भावना रखना स्वास्तिक का शब्दार्थ है। स्वास्तिक भगवान सुपार्श्व का चिन्ह है इसलिये भी पूज्य है। स्वास्तिक की आकृति में दो खड़ी रेखा है और चार आड़ी रेखाऐं बनायी जाती है। खड़ी रेखाऐं जीव व अजीव अर्थात जीव के साथ कर्म के संबंध सूचक और कर्म के उदय से होने वाली चार गतियों को दर्शाने वाली हैं। चार लाईन में से ऊपर की लाईन स्वर्ग, नीचे की लाईन नरक और आजू-बाजू की लाइने मनुष्य व तिर्यंच गति की सूचक है। दूसरी तरफ विचार करें तो दो खड़ी और आड़ी लाईने जीव द्रव्य व अजीव द्रव्य की सूचक हैं, चार लाईने धर्म, अधर्म, आकाश और काल इन चार द्रव्यों की सूचक है, तथा चार और लाइने, चार लाईनो के बाजू में खींची जाती है, जो कि उत्पाद, व्यय की सूचक है और बीच में चार बिन्दु रखे जाते हैं, जो कि ध्रौव्य के सूचक हैं। स्वातिक के ऊपर माथे पर एक अर्ध चन्द्राकार बिन्दु और तीन बिन्दियाँ बनाई जाती है जो कि रत्नत्रय और रत्नत्रय के द्वारा सिद्ध शिला की प्राप्ति की सूचक है । इस तरह पूरा स्वस्तिक तीन लोक की संरचना का सूचक है इसलिए अपने को तीन लोक के सभी जीवों के प्रति कल्याण की भावना रखना चाहिए ।

Q धर्म का मर्म क्या है ? क्या यह सिर्फ मंदिर जाने, पूजन, नियम पालन करने तक सीमित है ? कृपया समझायें।

सोनिका जैन कर्रापुर

A वीतरागता ही धर्म है । उस धर्म की प्राप्ति के लिये उत्तम क्षमा आदि दस धर्मो का पालन, करना, रत्नत्रय की आराधना करना और जीवदया का भाव रखना धर्म हैं । मंदिर जाना पूजा करना, नियमों का पालन करना आदि सबका उद्देश्य वीतरागता प्राप्त करना है । इन क्रियाओं को करने से हमारे भीतर राग-द्वेष की कमी आती है, तो ये क्रियायें सार्थक है अन्यथा बाह्य क्रियाये करते रहें और राग द्वेष बढते रहे, तो ऐसी क्रियाओं का कोई औचित्य नही है। धार्मिक क्रियायें करने से व्यक्ति के जीवन में दूसरे के प्रति मैत्री भाव, दीन दुखी जीवो के प्रति करूणाभाव, गुणवान लोगो के प्रति हर्ष का भाव और जो दुर्जन है और गलत रास्ते पर चल रहे हैं, उनके प्रति समता का भाव बना रहे यही धार्मिक क्रियाओं की उपलब्धि है। धर्म का वास्तविक स्वरूप समझे बिना और धर्म के प्रति वास्तविक श्रद्धा के बिना मात्र बाह्य क्रिया पूजन, नियम आदि का करना कार्यकारी नहीं है। इसलिये मात्र क्रियाओं को महत्व न देकर धर्म के स्वरूप वीतरागता को और धर्म के प्रति श्रद्धा अर्थात सम्यदर्शन को महत्व देना चाहिऐ।

Q दीन दुखियो की सेवा करना या भगवान के दर्शन करना दोनो में श्रेष्ठ क्या है ?

अनुभा जैन (MPS 6047) देवरी

A अगर देखा जाए तो दोनो ही कार्य श्रेष्ठ हैं। दीन दुखियों की सेवा करना, ये करूणा भाव भगवान ने ही हमें उपदेश देकर बताया है। जिन भगवान ने हमे श्रेष्ठ बातों का उपदेश दिया है उनके प्रति श्रद्धा भक्ति होनी चाहिए, इसलिए बार-बार दर्शन करके उनके प्रति अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करना चाहिए।

यदि आपको कोई शंका या प्रश्न है, तो हमें लिख भेजिये। मुनिश्री द्वारा उसका उत्तर दिया जाकर शंका का समाधान किया जायेगा ।

- सम्पादक

YOUNG JAINA AWARD-2008

AN OVERVIEW

There is some or other latent quality in each one of us. To understand that latent quality and to focus on that is the talent. Motivation, encouragement and guidance supplementing one's own efforts and hard work are instrumental in nurturing and bringing out that talent. The Young Jaina Award is one such motivation. The main objective of this award is to inculcate our cultural and moral values along with the higher studies. This award also encourages the young students to strive for continuous development.

With the blessings of Munishri Kshamasarji -true disciple of Acharya Shri Vidyasagarji, Young Jaina Award was first instituted in the year 2001 at Shivpuri(M.P.) on the auspicious occasion of the 2600th birth anniversary of Bhagwan Mahavir. The award envisioned and conceptualized by Munishri Kshamasarji has gained much coveted value among the student fraternity over the years. Maitree Samooh organized the 8th glorious Young Jaina Award ceremony at Padampura Ji on 11th and 12th of October 2008.

This year again there was an overwhelming response and more than two thousands forms were received. To bring all the boards to a common ground, normalization of the actual percentages was done using the topper's marks in the respective board examinations. Also for few boards only the compulsory courses were

Session following counseling was the nectar of the function in which a documentary was shown covering Munishri Kshamasagarji's views and vision, and his addresses in previous YJA functions. Munishree shared his intimate feelings and, explained the vision and objective of YJA. His affection and respect for talent and students was very obvious.

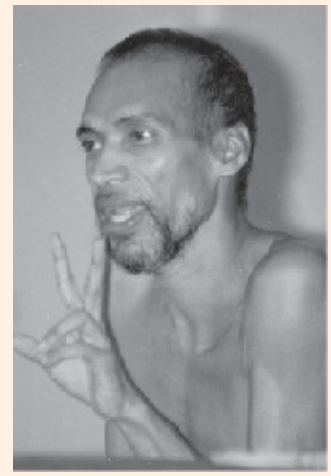

Munishree always emphasises that career should go hand in hand along with moral values and an impeccable character. Honesty, integrity and humbleness should be our core assets and strengths along with our intellectual skills. He shared few inspiring stories as well. He emphasized that higher education should inculcate simple, easy and sympathetic values in our personality. Positive thinking, sweet speaking, constructive activities and simple living should be indispensable aspects of our life style. We should also learn the art and science of compassion and affection.

counted when calculating the percentages. Due to limitation of accommodation and other resources at Padampuraji only 700 students among all Young Jaina Awardees could be invited to participate in the award ceremony.

Officially it was 11th, but it kicked off informally on 10th itself with the advent of awardees from the early morning itself. Receptions counters were set up at Jaipur and Shivdaspura railway stations to attend and receive the awardees that were flocking from various parts of the country.

YOUNG

J - Jain
A - Association
I - Integrated
N - Noble
A - Activity

AWARD

An interactive session and a cultural night were arranged in the evening. The open stage provided them not only a friendly ambience but also an opportunity to voice their opinions and interact with each other. The day had a melodious end with adhyatmic bhajans by Shri Ajay Saraswatji.

The following morning, YJA started officially when awardees in white dhoties and duppattas, and sarees participated in Jin Poojan. These small events like poojan, bhakti aimed at familiarizing the youth with few means of mental and spiritual prosperity are integral part of YJA.

The afternoon session commenced at 1.00 pm. This was an informative and a knowledge boosting session for awardees. Eminent career counselors and speakers from several fields gave talks on relevant and pertinent topics.

Jain Quiz was the most liked and awaited program in this session. A set of 20 objective questions to be solved in 15 minutes, was given to the awardees. The questions covered the basic aspects of Jainism. The performance of the awardees was quite good and even ten students did score cent percent marks.

In evening just after the Aarti, stream wise counseling sessions were organized for Science, Arts and Commerce streams. A special counseling session for X class awardees was also in arrangements. The penultimate event in this session, the drama 'Kulbhushan Deshbushan' by Garahakota team,

directed by Brhamchari Sanjay Bhaiaya Ji, could deliver the expected message effortlessly. The day couldn't have a better end for Adhyatmic bhajans in the melodious and mesmerizing voices of Ashika Shah and Neha Kala left everyone entranced.

The last day started with an early morning, energizing and pacifying alfresco Prarthana in pleasant weather. For the second time in the history of YJA, convocation ceremony for senior awardees was organized. Awardees of previous years, who had completed their graduation or post graduation in this academic year were invited for the convocation. Convocation aimed at re-instilling and refreshing YJA core values among awardees brought many doctors, engineers, Chartered Accountants, MBAs, Bachelors and Masters in Arts, Commerce and Science all at the one stage. Prior to convocation ceremony, awards for the 'Jain quiz' were given away in this session.

The main event, the award ceremony was in the last session. The afternoon session commenced at 1.00 pm with Manglacharan by "Young Orchestra, Jhansi". Though Munishree was not physically present, his messages were read out in hindi & english. After that Mr. P.L. Benara, introduced YJA & Maitree Samooh to students. The chief guests were Dr. Kusum Patoria and Mr. Surendra ji Hegde.

Dr. Kusum Patoria ji is a renowned scholar of Indian culture and Jain Philosophy and Senior Professor of Sanskrit. With more than hundred publications, she has received many awards including National Hindi Service Award, Ravindranath Centenary Gold Medal award to name few.

Mr. Suresh Kumar is an eminent educationalist and a social worker. He is national working president of Jain Milan, National Vice president of Federation of Jain Education Institutes. He is also Director of Karnataka Bank. He holds various posts in several institutes and organizations.

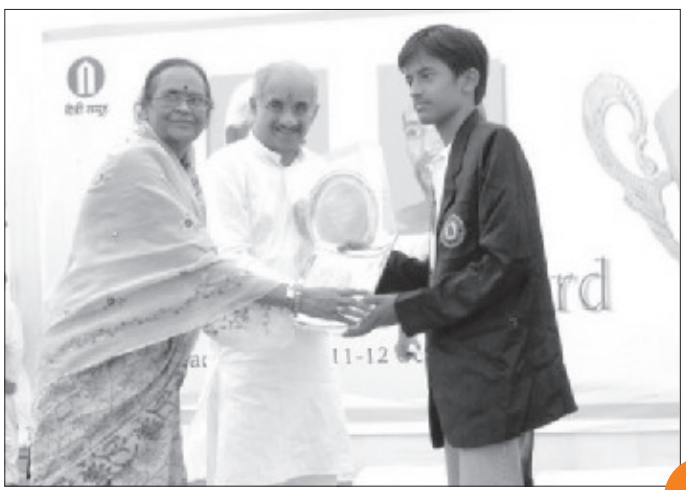

First of all awardees of 10th, then awardees of arts and then commerce and science were awarded. Toppers in each class were given special trophies. Announcement team had to put in meticulous effort to give even a very brief note of awardees' achievements. With Orchestra playing nice, melodious and patriotic tunes, Chief Guests themselves giving away the awards, this session stretched well over 4 hours. The session ended with the addresses of Chief Guests. Finally there was a farewell note.

This year's YJA ceremony may have been formally over with the farewell notes and awardees departing with lots of gifts and blessings, and hopes and wishes, but the bond has been cemented. They are with us still and they will always be with us. We will keep on cherishing their successful feats, and will assist and encourage them in their endeavors.

Jain Quiz Winner

NAME	FATHER'S_NAME	CITY	CLASS
Rahul Kumar Jain	Shri Vinod Kumar Jain	Jaipur	XII
Vivek Jain	Shri Vinod Kumar Jain	Jaipur	XII
Jayesh Kumar Jain	Shri Mahendra Kumar Jain	Jaipur	XII
Rajit Jain	Shri Nemi Chandra Jain	Jaipur	XII
Bhavesh Kumar Jain	Shri Nathulal Jain	Jaipur	XII
Deeksha Jain	Shri Kuldeep Jain	Tendukheda	X
Anubhav Jain	Shri Ramprasadji Jain	Khaniandhana	X
Garima Jain	Shri S.C. Jain	Jaipur	Senior
Abhishek Jain	Shri Shikhar Chand Jain	Jaipur	XII
Suraj Magadum	Shri Jinpal Magadum	Jaipur	XII

WINNERS of YJA 2008

Ist Rank of the Boys & Girls in XII Std. on the basis of Normalise percentage & X Std. on the basis of percentage

1st in Science Faculty

Priyanka Jain
Thane

Dhruvin V.Jain
Anand

1st in Art Faculty

Chandni Jain
Khachrod

Jayesh Jain
Jaipur

1st in Commerce Faculty

Nancy Navlakha
Bhopal

Rahul Jain
Ambala

1st in X Standard

Pooja C Hattiyawar
Chikodi

Suhas Jain
Bangalore

Swapnil Jain
Vidisha
IIT JEE-94, AIEEE-809,
BITS-PILANI

Samyak Jaroli
Neemuch
IIT JEE-246

Anugrah Jain
Bhopal
IIT-247, AIEEE-224/13,
M.P.PET-2

Pranjal Nayak
Korba
IIT-659,
AIEEE-2047

Nikhil Mehta
Jodhpur
IIT JEE-1017, AIEEE-822

Aadi Kumar Jain
Singroli
IIT JEE-1623

Shobhit Jain
Kota
IIT JEE-2166

Naman Jain
Chitawad
PET-1,AIEEE-1201/86,
IIT,BITS

Akhil Jain
Noida
UPTU-128,
AIEEE, IIT

Pramyesh Basall
Jaipur
CPMT-236

Aakansh Jain
Bhopal
VMMC-20,
CPMT-1020

STARS of YJA 2008

Selection in Professional Courses with XII - 2008

Achievements

Senior Awardees of YJA Graduation with High Percentage

Alok Jain
Kishangarh
B.E.Hons.with
CGPA 9.86 In 7 sem.

Varun Jain
Meerut
B.TECH

Smriti Patodi
Ajmer
B.TECH

Nikunj Kumar Jain
Burhanpur
B.TECH

Ankit Jain
Gwalior
B.TECH.
Secured highest pay package job in USA, Rank best in all Deptt. of IIT

Prerak S. Shah
Ahmedabad
BE
86.3% in 7 sem.

Arpit A. Gandhi
Surat
B.TECH.
All India rank 16 in GATE

Reshu Jain
Ashok Nagar
BE

Abhishek Jain
Jaipur
B.ARCH

Aviral Jain
Nagpur
B.E

Rishabh Chowdhary
Jaipur
B.TECH

Rajul Gandhi
Ashok Nagar
B.E.
Won Bronze Medal At National Level In Handball

Rini Modi
Sagar
B.E

Samriddhi jain
Kota
BDS

Prachi Benara
Agra
MBBS

Rupali Jain
Vidisha
MBBS

Manisha Jain
Jaipur
MBBS

Rachna Jain
Kota
BDS

Sapna Jain
Sagar
B.Pharm

Garima Jain
Jaipur
BCA / GNIIT

Priyanka G Patny
Ahmednagar
B.Sc

Ekta Jain
Ashok Nagar
B.Sc

Ankita Modi
Ashok Nagar
B.Sc

Maneesha Jain
Sagar
B.Sc

Senior Awardees of YJA Graduation / Post Graduation with High Percentage

Tanmay Ved
Barnagar
B.A.
IIIrd in University

Sakshi Jain
Jaipur
B.A. - Ist in Univ.
Selection in Nothimghann Univ . London

Yashasvi Jain
Jaipur
B.Com.
29th Rank in CAPCC

Mahima Jain
Morena
B.Com.

Anshul Jain
Jaipur
B.Com.
5th Rank in CAPCC

Rohit Patni
Ajmer
C.A

Prachi Jain
Gwalior
C.S

Shashank Jain
Agra
M.Sc.
New Maxico State Univ.

Yogendra Ratan Jain
Nagpur
MBA
YJA Topper in 2001

Neha Kala
Jaipur
M.Mus

Achievers

Senior Awardees of YJA - 2007 Selection in Professional Courses-2008

Chakra Diwakar
Lalitpur
PMT

Sakshi Jain
Bhopal
AIPMT

Palash Jhabak
Mahasamund
IIT-222
AIEEE-795

Jayant Jain
Jaipur
AIEEE
IIT-1726

Kunal Jain
Kota
CPT
IInd in Rajasthan

Top Ten-X

SUHAS JAIN
BANGALORE

NIKHIL JAIN
AGRA

VIVEK V. KURKUT
PANAGAON

ABHINAV JAIN
ALIGARH

PALASH R. BADJATYA
AURANGABAD

SHRENIK LALWANI
BEED

ABHISHEK JAIN
NAGPUR

PRANAY P.NAHAR
BEED

SAMIKSH JAIN
GURGAON

ANUJ V. DONGAONKAR
KARANJA LAD

100 % in SCIENCE&TECHNOLOGY.,MATHS

POOJA C HATTIYAWAR
CHIKODI

SWATI.V
PUDUCHEERY
100 % in MATHEMATICS

KAVANA .S .JAIN
ASHWATHNAGARA

PRIYANSHI JAIN
BHOPAL

KRITIKA PANDYA
JAIPUR

ADITEE MUDHOLKAR
NAVI MUMBAI

SHIVANI JAIN
JAIPUR

VARSHA V. DODDAMANI
DHARWAD

AASHIMA JAIN
JAIPUR

S. SUJASHA
VILLUPURAM

Top Ten XII Science

DHRUVIN V. JAIN
ANAND
IIT JEE, AIEEE

SPARSH SINGHAI
KANPUR
IIT JEE, AIEEE 3rd Rank in UP

AMIT JAIN
SATNA
PET

SANGHAVI MAYANK D
BHAVNAGAR

AKHIL JAIN
NOIDA, AIEEE

PRAMYESH BASALL
JAIPUR, CPMT

ANANT JAIN
BHOPAL

VIPIN JAIN
TIKAMGARH

VIKRANT SAWALKAR
NAGPUR

ANSHUL KATARIA
RATLAM

PRIYANKA JAIN
THANE
AIEEE

ITI JAIN
KANPUR
100 % in MATHEMATICS

NANCY JAIN
DAMOH

S.JWALAMALINI
VANDAVASI

PARIDHI JAIN
JAIPUR

ANKHITA JAIN
WARANMGAL

PRACHI JAIN
JABALPUR

NEHA JAIN
RATLAMPET

SURBHI JAIN
JAIPUR

AVISHA VED
UJJAINPET

Top Ten XII Commerce

RAHUL JAIN
AMBALA

RAUNAK JAIN
JAIPUR

ANSHUL JAIN
AJMERCPT

JITESH JAIN
HISSAR

AKSHAT PATNI
JAIPUR

SARANSH JAIN
JAIPURCPT

VAIBHAV JAIN
JAIPUR

ANIMESH JAIN
JERUWAKHERA

ANKIT JAIN
KATNICPT

MAYANK JAIN
RAMGANJ MANDI

NANCY NAVLAKHA
BHOPAL
1st position in MP

E.SARANYA
CHENNAI

KIRTI JAIN
AJMER

JYOTI JAIN
SAGAR

PARIDHI JAIN
JAIPUR

VIDHYA H. SHAH
BHAVNAGAR

PRIYANKA JAIN
GUNA

LISHA AJMERA
JAIPUR

PRIYA JAIN
BHOPAL

ANISHA JAIN
JAIPUR

Top Ten XII Arts

CHANDNI JAIN
KHACHROD

REVATHI PRIYA .P
CHEYYAR

H.DIMPLE JAIN
HYDERABAD

VARSHA JAIN
KOTA

NIDHI JAIN
DEVENDRA NAGAR

AROHI.A.AGARKAR
NAGPUR

JAYESH JAIN
JAIPUR

AMRITA JAIN
KARRAPUR

RAHUL JAIN
JAIPUR

RESHUKA JAIN
DAMOH

YJA 2008 Overview

Young Jaina Award 2008 received an overwhelming response from entire country. More than two thousand application forms were received from students of 20 states and union territories covering 13 state or central educational boards. In all 2085 students were awarded with 883 students in X, 37 in Arts, 560 in Science, 391 in Commerce streams in XII standard and 214 in senior or professional course category. Proportion of boys to girls was also around 50 percent. There were more than 100 awardees that had more than 95% marks when normalized to their board toppers. It will come with no less surprise that there were around 590 students with more than 90 percent marks (normalized) . There were around half a dozen that even had a rank in top 5 in the board's merit list. Around 200 awardees had qualified in various professional courses along with scoring high marks in board examinations. Indeed few even had got very good ranks in more than one professional course. Among these there were around 173 students who got good ranks in professional exams like IIT-JEE, AIEEE, PET, PMT or CPMT in science stream. Around 34 awardees had cleared CPT in commerce stream. Twenty students had even represented their state at national level or had won medals at state level in sports. Priyanka Jain (Thane, Maharastra) got admission in BITS-

Total Awardees	2085
States Covered	20
Educational Boards Covered	13
Awardees getting more than 95% marks (normalized to topper's marks)	108
Awardees getting more than 90% marks (normalized to topper's marks)	590
Number of awardees getting more than 95% marks (absolute)	24
Awardees getting more than 90% marks (absolute)	261
Board toppers	3
Awardees in top 5 in board merit list	More than 6
National Award winners/ National level sport-persons	19
Students Selected in professional courses	207
Student selected in IIT-JEE, AIEEE, PET,CPMT , PMT , NTSE	173
Students selected in CPT	34

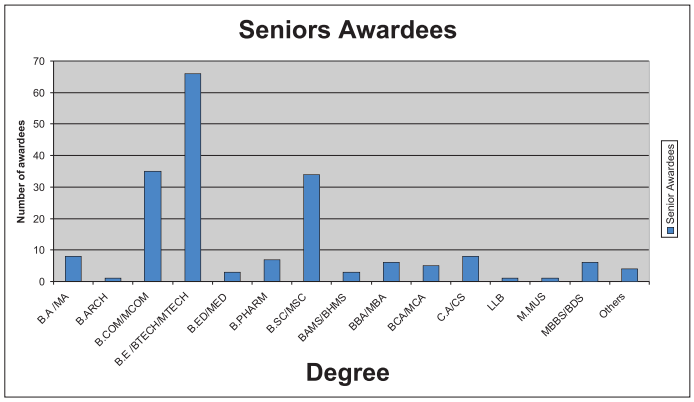

Pilani with 96.5 % percent marks and Dhruvin Vipulbhai Jain (Anand, Gujrat) who qualified IIT JEE and AIEEE along with scoring 94.4 percent marks in board examinations were toppers in science stream of XII standard.

Nancy Navlakha (Bhopal, MP) with 90.22% and who stood first in MP board Commerce merit list was the top scorer among girls and Rahul Jain(Ambala, Haryana) with 95.2 percent was the top scorer among boys in XII commerce stream.

Chandni Jain (Khachrod, MP) with 88.44 marks was the topper in Arts stream.

Suhas Jain (Bangalore) with 97.90% and Pooja C. Hattiyawar (Chikodi, Karnataka) with 96.57% were the toppers in X standard list among boys and girls respectively. Here is a synopsis for YJA 2k8.

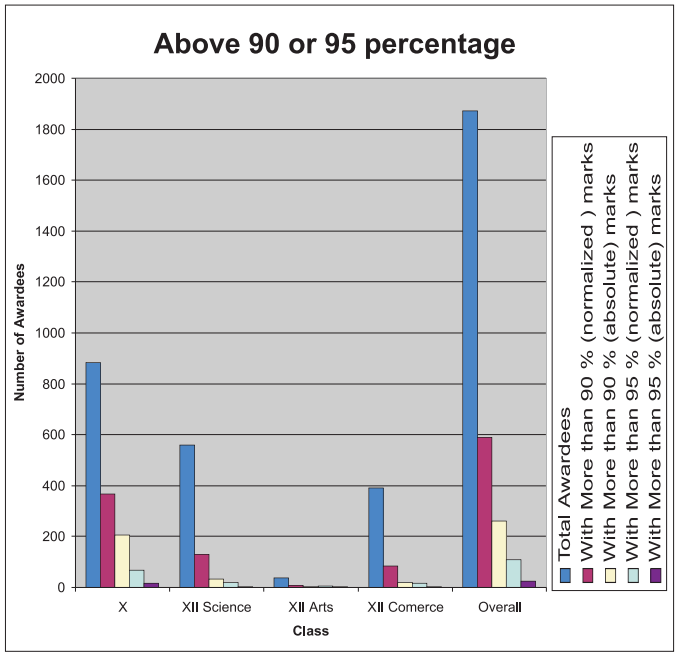

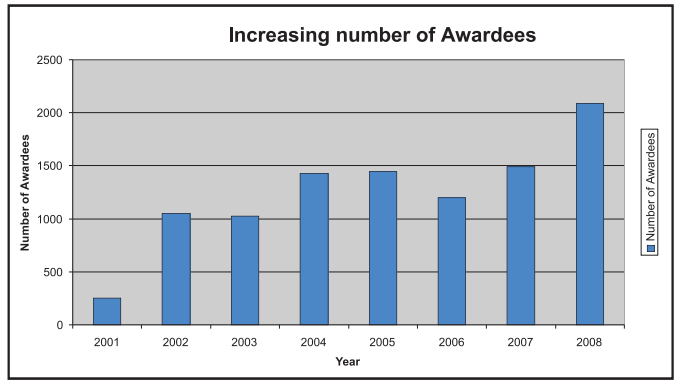

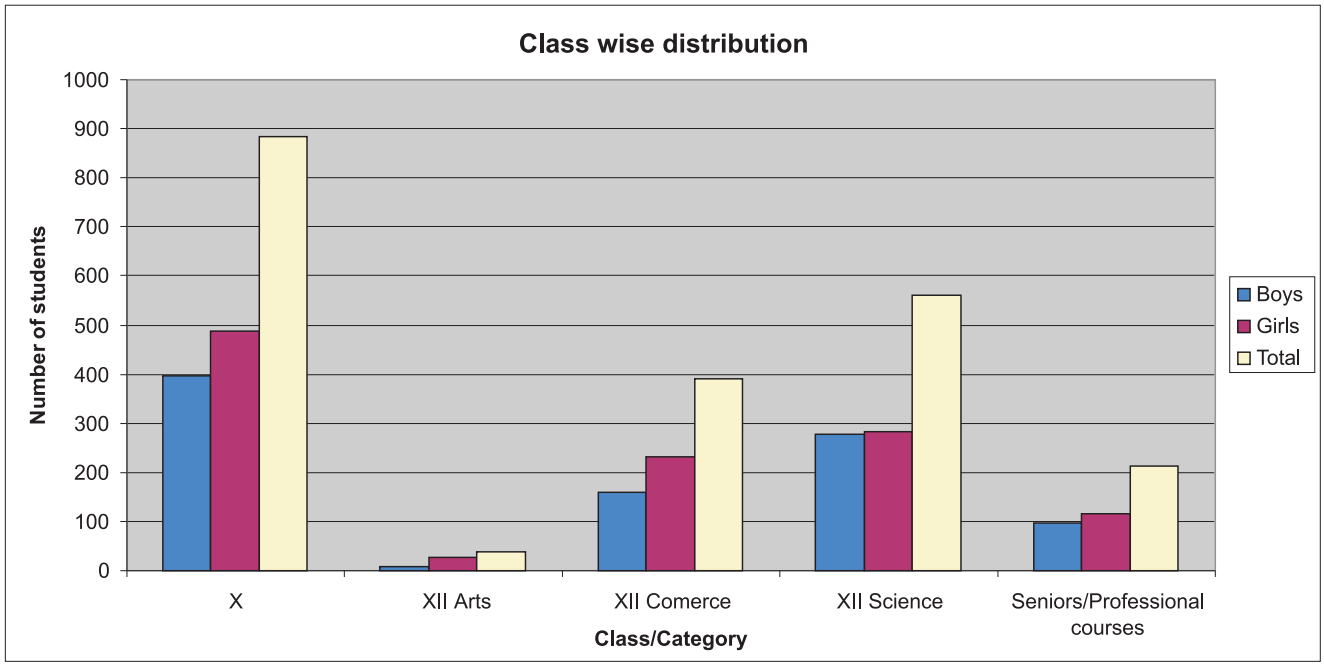

संस्मरण

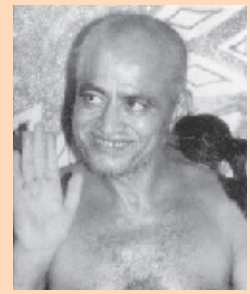

श्रेष्ठ–साधना

मुक्तागिरि का चातुर्मास पूरा हुआ। संघ–सहित आचार्य महाराज ने रामटेक की ओर विहार किया। रास्ते में एक दिन अम्बाड़ा गॉव पहुँचते–पहुँचते अंधेरा घिर गया। सारा संघ गांव के समीप एक खेत में ठहर गया। खेत में ज्वार के डंठलों से बना एक स्थान था। रात्रि विश्राम यही करेंगे, ऐसा सोचकर सभी ने प्रतिक्रमण किया और सामायिक में बैठ गए।

दिसम्बर के दिन थे। ठंड बढ़ने लगी । रात में नौ बजे जब श्रावकों को मालूम पड़ा कि आचार्य महाराज खेत में ठहरे हैं तो बेचारे सभी वहां खोजते–खोजते पहुंचे। जो बनी सो सेवा की, इंतजाम किया। स्थान एकदम खुला था, नीचे बिछे डंठल नुकीले कठोर थे। इस सबके बावजूद भी आचार्य महाराज अपने आसन पर अडिग रहे। किसी भी तरह से प्रतिकार के लिए उत्सुकता प्रकट नहीं की। लगभग आधी रात गुजर गई। फिर दिन भर के थके शरीर को विश्राम देने के लिए वे एक करवट से लेट गए। उनके लेटने के बाद ही सारा संघ विश्राम करेगा, ऐसा नियम हम सभी संघस्थ साधुओं ने स्वतः बना लिया था, सो उनके उपरांत हम सभी लोग लेट गए।

ठंड बढ़ती देखकर कुछ श्रावकों ने समीप में रखे सूखे ज्वार के डंठल सभी के ऊपर डाल दिए। सब चुपचाप देखते रहे, किसी ने कोई प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं की। लोग यह सोचकर निश्चित हो गए कि अब ठंड कम लगेगी, पर ठंड तो उतनी ही रही, डंठल का बोझ और चुभन अवश्य बढ़ गई।

उपसर्ग व परिषह के बीच शान्त–भाव से आत्म–ध्यान में लीन रहना ही सच्ची साधुता है, सो सभी साधुजन चुपचाप सब सहते रहे। सुबह हुई, लोग आए, डंठल अलग किए । हमारे मन में आया कि श्रावकों को उनकी इस अज्ञानता से अवगत कराना चाहिए, पर आचार्य महाराज की स्नेहिल व निर्विकार मुस्कराहट देखकर हमने कुछ नहीं कहा। मार्ग में आगे कुछ दूर विहार करने के बाद आचार्य महाराज बोले कि ''देखो, कल सारी रात कैसा कर्म–निर्जरा करने का अवसर मिला, ऐसे अवसर का लाभ उठाना चाहिए।'' हम सभी यह सुनकर दंग रह गए। मन ही मन अत्यन्त श्रद्धा और विनय से भरकर उनके चरणों में झुक गए। आज कर्म–निर्जरा के लिए तत्पर ऐसे रत्नत्रय धारी साधक का चरण सान्निध्य पाना दुर्लभ ही है।

अम्बाड़ा (1980)

उड़ान

नदी के ऊपर
उड़ती चिड़िया ने
आवाज़ दी
नदी ने मुस्कुराकर कहा –
बोलो चिड़िया

चिड़िया ने
और ऊंची उड़ान ली
पहाड़ के ऊपर
उड़ती चिड़िया ने
आवाज़ दी
पहाड़ ने धीरे से कहा –
बोलो चिड़िचा

चिड़िया ने
और ऊंचे उड़ते–उड़ते पुकारा
पर आवाज़ खो गयी

चिड़िया लौट आयी है
वह कहती है
कि अपनी आवाज़
अपने तक आती रहे
इतना ही
ऊंचे उड़ना ।

–मुनि क्षमासागर

Flight

The bird called the river
as it flew above it.
The river smiled
and said, 'Speak, Bird'

The bird flew higher.
Flying above the cliff
the bird called.
The cliff said softly.
'Speak , Bird'

The bird
flew higher and higher .
Its voice got lost.

The bird has returned now
to say,
'Fly only as high'
as the reach of
your own call.'

Translated by - Sunita Jain

मुक्ति से साभार

Your Feelings

पद्मपुरा जी में प्रवेश द्वार पर रजिस्ट्रेशन काउंटर पर जब मैंने रजिस्ट्रेशन करवाया तो मुझे स्वागत का एक बुक मार्क मिला, जिसमें मुनिश्री की कविता 'चिड़िया' भी थी, उसके नीचे जैसे ही ''शुभाशीष'' पढ़ा, तो मन खुश हो गया। ऐसा लगा कि मुनिश्री वहीं और उन्होंने आशीर्वाद दे दिया। प्रोग्राम के तीन दिनों में कई बार उनके आशीर्वाद का आभास हुआ।

Reshu Jain, Ashoknagar, **MPS 4015**

However every possible effort was made to perform the function successfully in absence of Munishri, yet I would suggest all the awardees to go for the darshan of Munishri. I think that just the darshan of Munishri has an energy that can change one's life. The attitude to deal with the situations changes. You remain calm during adverse situation and possess the right attitude to deal with it. Regular Darsen of Munishri charges your battery and whatever dirt, jealous, and bad thoughts are accumulated in your mind, are automatically removed. Being close to Munishri, you have no tensions, no frustrations, just free mind.

Nikunj Jain, Bina (M.P.)

Young Jaina Award अपार उर्जा, स्फूर्ति और उत्साह का संचार करने वाला है । यहां समय की पाबन्दी देखकर बहुत अच्छा लगा जब मुझे मंच पर आमंत्रित किया गया तो ऐसा लगा कि मैंने मानो आसमान ही छू लिया हो । हमारे साथ हमारे माता–पिता को भी बहुत खुशी हुई । जब मेरे विद्यालय में मेरे Young Jaina Award के सलेक्शन के बारे में बताया तो विद्यालय में भी मेरा सम्मान किया गया ।

Atul Jain, Kota, **RJX 8010**

यहां आने से पहले मुझे बहुत शंकाएं थी लेकिन मैं जैसे ही थका–हारा यहां आया तो यहां के स्वागत और व्यवस्था ने मेरे विचार पूरी तरह से बदल दिये । मैं इस कार्यक्रम में पहली बार आया हूँ मुझे इससे पहले कहीं भी इतना सम्मान नहीं मिला इसलिए मुझे अच्छा लगा । हम जैसे नाचीजों को इस लायक समझा गया और सम्मानित किया गया, यह बहुत बड़ी बात है । मुझे पूरे कार्यक्रम में क्षमासागरजी की उपस्थिति का अहसास होता रहा । यहां पूरे भारत से आये प्रतिभागियों को राजस्थान की झलक देखने का मौका मिला । ऐसा लगा कि सब कुछ हमारे लिए ही हो रहा है । मुझे प्रेरणा मिली है कि मैं आगे चलकर कुछ करके दिखाऊगां । महान हस्तियों ने हमारी सेवा की और महान हस्तियों के हाथों से अवार्ड प्राप्त हुआ यह बहुत अच्छा लगा ।

Shiva Jain, Khaniadhana, **MPS 8013**

The function is a kind of auspicious occasion for the students and all the guardians. I am so glad to be awarded by Maitree Samooh with blessings of Munishri Kshamasagarji Maharaj. The arrangement was very good. The counseling was the most important as well as the most interesting for me.

Uttara Narad, Burhar (M.P.) **MPX 8010**

सबसे बड़ी चीज जो मैंने सीखी वो है पॉजीटिव थिंकिंग और यही attitude मैंने यहाँ के सारे मैत्री समूह के सदस्यों में देखा।

Nishi Jain, Ganjbasoda (M.P.) **MPS 8037**

मैत्री समूह के इस कार्यक्रम में सभी लोग तन, मन, धन से सहयोग कर रहे थे और उनका निःस्वार्थ भाव और समर्पण देखते ही बनता था। मुनिश्री के प्रवचनों को सुनने की बहुत इच्छा थी वह पूरी हो गयी। फिर भी मुनिश्री के दर्शन नहीं हो पाये, नेत्र तरस गये । मैत्री समूह वास्तव में हमारा परिवार है । ये दिन मेरे लिए अपने जीवन में बहुत ही यादगार बन गया है । जिन्हें कभी भुला नहीं सकती । यहाँ आकर मैं अपने आप को गौरवान्वित महसूस कर रही हूँ ।

Beena Jain, Kolaras, **MPX - 8020**

इस कार्यक्रम में आने वाले अलग–अलग राज्यों के प्रतिभावान विद्यार्थियों के मिलन से आपसी भाईचारे की भावना विकसित होती है । यहा पर मैत्री समूह के कार्यकर्ताओं द्वारा दी गई सभी सुविधाएं तथा सेवाएं बहुत अच्छी थी ।
किन्तु इस अवसर पर मुनिश्री क्षमासागरजी महाराज की अस्वस्थता के कारण उनकी कमी बहुत खली । यदि यह कार्यक्रम उनकी उपस्थिति में होता तो और अधिक रोचक और महत्वपूर्ण होता ।

Chirag Jain, Jaipur, **RJX 8049**

मुझे मैत्री समूह के द्वारा आयोजित Young Jaina Award बहुत प्रसन्नता दायक रहा । एक बात थोड़ी कम पसन्द कि आपने बच्चों को इतना बांध लिया कि वे कुछ समय फ्री नहीं रह पाये । मुनिश्री की अनुपस्थिति से थोड़ा दुख हुआ ।
आरती, पूजा, नाटक, भजन संध्या काफी मनोरंजक रहे ।

Priyanka Jain, Kota, **RJA 8015**

Young Jaina Award का सारा कार्यक्रम एकदम व्यवस्थित था। शाम को आरती बहुत ही बेहतरीन ढ़ग से हुई । जिससे पूरा मंदिर दीपो की ज्योति से जगमगा गया । खाने में न हीं जमीकन्द और न ही कोई दुदल, यह बहुत अच्छा लगा । अवार्ड के पीछे क्षमासागरजी महाराज और मैत्री समूह का योगदान सराहनीय रहा ।

Shilpa Jain, Khaniyadhana (Shivpuri), **MPC 8022**

कार्यक्रम में की गई प्रत्येक व्यवस्था तथा मैत्री समूह के सदस्यों में ऐसा सौहार्द देखकर बहुत अच्छा लगा । फिर भी एक बात का दुख जरूर रहा कि इतनी अच्छी व्यवस्थाएं हुई लेकिन मुनिश्री की अनुपस्थिति थी।

Khusbbu Jain, Kota, **RJX 8001**

It is a not only an award for me but it gives me an "Art of living". My life has been going very much smooth after getting awarded in 12th and now in graduation. I am very-very happy. Each and every word of munishree touches the inner core of my heart. Last time in XII standard when I got award and blessing of Munishree, the thought came in my mind at the moment was मैं इतनी मेहनत करूंगी कि मुझे इस मंच पर फिर से आने का मौका मिले and today my that dream has come true. Young Jaina Award means a lot &lot to me.

Ekta Jain , Ashok Nagar , **MPS 4168**

When 'Chitra Anavaran' was being done, I felt like Shri Kshamasagarji Maharaj himself is present infront of my eyes. But still during entire programme I felt that there is some thing missing. Now I realize that the only person, who we all students needed, is our maharji. The namokar mantra in the voice of Munishree is a blessing to us. All the arrangements were very nice.

Akhil Jain, Jaipur **CBS - 8089**

यहां गरीब अमीर का कोई भेदभाव नहीं रहा सभी को एक समान सम्मान दिया गया । मुझे अच्छा लगा । यहां मैं कई बच्चों से मिली, मुझे बहुत अच्छा लगा । अपने से बड़े भाई बहिनों से मिलकर प्रसन्नता हुई और प्रोत्साहन मिला । मैत्री समूह के सारे सदस्यों के मध्य परस्पर प्रेम और सहयोग की भावना देखकर हमें भी वैसा बनने की शिक्षा मिली। मेरी आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं है पर मुझे यहां आकर आगे बढ़ने की प्रेरणा मिली ।

Prachi Jain, Damoh, **MPX 8014**

अब तक सबको अवार्ड लेते देखा था, आज ये अवार्ड मिलने से मैं भी अपने आप को स्पेशल समझने लगी हूँ । अवार्ड लेते समय एक ही बात की कमी बहुत महसूस हुई, काश मुनि श्री सामने बैठे होते, और मैं आपके सामने अवार्ड ले पाती । लेकिन मैंने मन ही मन आपका स्मरण कर लिया । भगवान आपके सारे कष्ट हमें दे दे । आप जल्दी से जल्दी स्वस्थ हो जायें और सन् 2009 का Young Jaina Award आपकी उपस्थिति में हो ।

Surbhi Jain, Gwalior, **ADS 8006**

मैं कार्यक्रम देखकर अब संकल्प करती हूँ कि रोज न सही लेकिन सप्ताह में एक बार तो निश्चित मंदिर जाऊँगी और स्वाध्याय करूंगी । भारत में लड़कियों के प्रति भेदभाव होता है किन्तु जब महाराज के प्रवचन सुने तब ऐसा लगा कि शायद महाराज जी यहां होते तो हम इस अवसर का लाभ लेकर अपने जीवन को धन्य कर पाते । लेकिन क्या पता कि हम उनके दर्शन पाने के लायक ही न हो । इसलिए तो हम यहां आये लेकिन महाराज के दर्शन न हो सकें। कार्यक्रम की जितनी भी प्रशंसा की जाये कम है ।

Rupal Jain, M.P.

मुझे इस कार्यक्रम में एक ही कमी नजर आयी वो महाराज श्री की अनुपस्थिति । अगर आज महाराज श्री भी इस कार्यक्रम में आते तो इस कार्यक्रम में चार चाँद ही नहीं बल्कि हजारो चाँद लग जाते । यंग जैन अवार्ड से मैं इतना प्रभावित हूँ और इतना प्रेरित हुआ हूँ कि मैं आगे भी इसी तरह पूरी मेहनत और लगन से कार्यरत रहूँगा और आगे भी इसी तरह इस प्रोग्राम में आता रहूँगा ।

Siddhant Jain, Ajmer, CBC 8043

महाराज क्षमासागर के आशीर्वाद से शुरू किया गया यह कार्यक्रम वास्तव में एक सफल कार्यक्रम साबित हुआ है । दुख इस बात का है कि उनके इस कार्यक्रम में दर्शन नहीं हो सकें । मैंने इस कार्यक्रम में पहली बार भाग लिया है । मुझे एक बात समझ में आयी कि हमें अपनी क्षमता का ज्ञान आवश्य होना चाहिए । हमारी चाबी हमारे पास होनी चाहिए, हमारा कंट्रोल किसी दूसरे के हाथों में नहीं होना चाहिए । मुझे इस कार्यक्रम में पर्यावरण की सुरक्षा, अपने संस्कारों का पालन निस्वार्थ सेवा की भावना आदि बातें सीखने को मिली । मैं अब गर्व से कह सकता हूँ कि मैं एक जैन हूँ ।

Praveen Jain, Jaipur , **RJC 8015**

कार्यक्रम के बार में क्या कहूं वह तो अद्वितीय था और युवावर्ग के विकास में सहयोगी था । काउन्सलिंग के लेक्चर विद्यार्थियों के दृष्टिकोण और स्तर के अनुरूप नहीं थे । जिनधर्म के किसी सिद्धान्त के आधार पर विभिन्न दृष्टिकोणों से एक गोष्ठी का आयोजन किया जा सकता है । जिसमें वक्ता भी इच्छुक छात्र ही होंगे । इस कार्यक्रम में प्रतिभाशाली युवकों के लिए नैतिक आधार पर संबंधी बातें तर्कसंगत दी जानी चाहिए । बच्चों को अपनी इच्छानुसार बोलने का अवसर देना चाहिए जिससे उनमें छिपी अन्य प्रतिभाएँ भी सामने आये ।

Rajit Jain, Jaipur, **RJA 8010**

5–5 मिनिट प्रतिभाशाली विद्यार्थियों द्वारा भी वकतृत्व प्रस्तुत किया जाए । नलिनजी और प्रतिभा जी के व्याख्यान प्रेरणादायक रहे । अन्य समस्त कार्यक्रम अत्यन्त पसन्द आये।

Rahul Kumar Jain, Jaipur, **RJA 8003**

कार्यक्रम बहुत अच्छा था । बच्चों के माँ पिता का नाम और पिताजी किस पद है, इस बात की घोषणा मन्च से की जानी चाहिए । उच्चतम अंक प्राप्त करने वाले छात्र/छात्राओं से अध्ययन के नुस्के मन्च पर बुलवाना चाहिए ।

Rakesh Kumar, Damoh, **MPC 8047**

हमें क्षमासागरजी महाराज के प्रवचन बहुत अच्छे लगे । हमने पहली बार मुनि श्री के प्रवचन सुने ।
मैत्रीसमूह ने निस्वार्थ भावना से सेवा करके हमें भी ऐसा ही करने की प्रेरणा दी । अगले अवार्ड में मुनिश्री का सानिध्य हमें प्राप्त हो ऐसी भावना है ।

Ankit Jain, Katni, **MPC 8009**

I felt very happy that I had attended such a great program. Every thing was well organised and was according to time. But one thing I want to say is that I am from Bangalore so I had to miss my college classes for 8 days and come here.

S. Suhas Jain, Bengalore, KTX 8001

Overall function was very good. You maintained time very well and service was too good. The poojan was excellent and the night arti with lamps was marvelous. I disliked the teachers/ professors being interrupted while they were telling some good knowledgeable things. I am praying to be able to come again and get awarded by Munishree Kshamasagarji.

Sahil Jain, Nagpur (Mah.), **MHX 8038**

मेहता जी का जीवन जीने की कला लेक्चर बच्चों के लिए ज्ञानवर्धक था। महाराज श्री के जीवन पर आधारित डॉक्यूमेन्ट्री से उनके जीवन के बारे में पता चला और उनके न होते हुए भी उनकी उपस्थिति का बोध हुआ । मैत्री समूह के सभी लोग बहुत ही स्नेहशील और सहयोगी है ।

Chetan Jain, Hisar (Haryana), **HRC 8002**

मेरे बड़े भैया और दीदी से मुझे यहां आने की प्रेरणा मिली । यहां पर महाराज की कमी खली । मैंने महाराज जी को बहुत याद किया लेकिन महाराजजी का आशीर्वाद हमारे साथ है ।

Ankesh Jain, Jaipur, **RJC 8028**

महत्वपूर्ण चिट्ठी

मतलब है...

प्रथम विश्व युद्ध के दिनों दो गहरे दोस्त अपने देश की तरफ से लड़ रहे थे और एक ही मोर्चे पर तैनात थे। दोनों दोस्त अपनी–अपनी खंदकों में पोजीशन लेकर दुश्मन का सामना कर रहे थे, बम फूट रहे थे और गोलियां कानों को छूकर निकल रही थी, बड़ी भीषण लड़ाई चल रही थी ।

दोनों दोस्त अपनी–अपनी जगह पर मुस्तैद थे, तभी एक जोर का धमाका हुआ । एक दोस्त ने दूसरे की चीख़ सुनी उसने थोड़ा सा उचक कर देखा, तो दूसरा दोस्त अपनी खंदक में लहूलुहान पड़ा हुआ था । उसके पास बम था और शायद उसे गोली भी लगी थी । जब दोस्त ने अपने दोस्त की हालत देखी, तो वह उसकी मदद के लिए तड़प उठा। उसने अपने लेफ्टिनेंट से उस तक जाने की अनुमति मांगी । लेफ्टिनेंट दोनों की मित्रता से परिचित था, पर वह व्यवहारिक आदमी था, उसने कहा 'देखो, तुम जा तो सकते हो, लेकिन मेरे ख्याल से इसका कोई मतलब नहीं होगा । उसकी हालत बहुत खराब है उसके जीवित बचने की सम्भावना बहुत कम है । अगर तुम उस तक पहुंचने की कोशिश करोगे, तो उल्टे तुम्हारे प्राण संकट में पड़ जाएंगे ।

सैनिक के लिए अपने लेफ्टिनेंट की चेतावनी कोई मायने नहीं रखती थी वह तो किसी तरह घायल दोस्त तक पहुंचना चाहता था, सो वह तत्काल दौड़ पड़ा। किसी को दौड़ता देख दुश्मन खेमे से गोलियों की बौछार और तेज़ हो गई, लेकिन चमत्कार कहें या उसकी निःस्वार्थ दोस्ती का कमाल, वह न सिर्फ अपने दोस्त की खंदक तक पहुंचा, बल्कि उसे कंधे पर लादकर अपनी खंदक तक भी ले आया ।

जब उसने दोस्त को जमीन पर लिटाया, तो उसके साथियों ने देखा की उसकी सांसें बंद हो चुकी हैं । लेफ्टिनेंट ने सैनिक से सहानुभूति जताते हुए कहा, ''मैंने तुम्हें पहले ही कहा था कि वहां जाने का कोई मतलब नहीं है । तुम्हारे दोस्त को बचना ही नहीं था और तुम्हारी जान भी खतरे में पड़ गई थी ।''

सैनिक बोला, ''जी सर, पर मेरा जाना बेमतलब नहीं रहा, क्योंकि जब मैं उस तक पहुंचा, तब उसकी सांसें चल रही थी । मुझे देखकर उसकी आंखों में चमक आ गई और मेरे मरते दोस्त ने आखिरी वाक्य यह कहा – दोस्त मैं जानता था तुम जरूर आओगे ।''